महिलाओं में राजनैतिक सशक्तिकरण का प्रगति–विश्लेषण

गीता सिंह

रामायण, महाभारत काल के साहित्य में कई स्त्री–राज्यों का वर्णन है। रावण ने नारद के उकसाने पर श्वेत द्वीप के स्त्री–राज्य पर आक्रमण किया। उस द्वीप पर कोई कार्यकारी पुरुष न था, फिर भी रावण को मुंह की खानी पड़ी थी। कैकेयी राजा दशरथ की विदुषी रानी/मंत्राणी थी और पति के साथ रणक्षेत्र में भी जाकर सन्मुख युद्ध में भाग लेती थी। पांडवों ने जब अश्वमेध यज्ञ किया तो हिमालय–स्थित एक स्त्री–राज्य की रानी प्रमिला ने घोड़ा पकड़कर अर्जुन से युद्ध किया था। प्रमिला को हराने में असफल रहने पर ही अर्जुन को तत्कालीन युद्ध–नीति का सहारा ले, प्रमिला से विवाह करना पड़ा था।

मुगलकालीन इतिहास तो गोंडवाना की रानी दुर्गावती, चित्तौड़ की महारानी कर्मदेवी, मेवाड़ की रानी कर्णदेवी, छत्रपति शिवाजी की पुत्रवधू–मराठवाड़े की राजमाता ताराबाई जैसी योग्य शासिकाओं और वीर सेनानी स्त्रियों की गौरव–गाथाओं से भरा पड़ा है। अंग्रेजों से लोहा लेने वाली कित्तूर की रानी चेनम्पा और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को कौन भूल सकता है। रजिया बेगम, चांदबीबी, अहल्याबाई होल्कर के शासन और शौर्य की कहानियां हर स्कूल में बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं। आज केरल में जो साक्षरता–दर भारत में सभी राज्यों से अधिक है, उसका श्रेय भी त्रावणकोर (केरल) की एक शासिका रानी गौरी पार्वती बाई के सु–शासन को ही जाता है। प्राचीनकाल की अधिकार–संपन्न भारतीय नारी मध्यकाल के बाद 19वीं शताब्दी तक आते–आते लगभग पूरी तरह अधिकारविहीन व पर–निर्भर हो चुकी थीं।